

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्हणभरतशक्रहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे बाल्मीकीये आदिकार्ये सुन्दरकाण्डे

॥ चतुश्चत्वारिंशः सर्गः ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ चतुश्चत्वारिंशः सर्गः ॥

प्रहस्तपुत्रस्य जम्बूमालिनो रधः

सन्दिष्टो राम्फसेन्द्रेण प्रहस्तस्य सुतो बली।
जम्बूमाली महादंष्ट्रो निर्जगाम धनुर्धरः ॥ 5.44.1 ॥

रक्तमाल्याम्बरधरः श्रुत्वा रूचिरकुण्डलः।
महान् विरुत्तनयनश्चण्डः समरदुर्जयः ॥ 5.44.2 ॥

धनुः शक्रधनुः प्रख्यं महद् रूचिरसायकम्।
रिम्फारयाणो रेगेन रज्जाशनिसमस्वनम् ॥ 5.44.3 ॥

तस्य रिम्फारघोषेण धनुषो महता दिशः।
प्रदिशश्च नभश्चैर सहसा समपूर्यत ॥ 5.44.4 ॥

रथेन खरयुक्तेन तमागतमुदीक्ष्य सः।
हनूमान् रेगसम्पन्नो जहर्ष च ननाद च ॥ 5.44.5 ॥

तं तोरणरिटक्लृप्तं हनूमन्तं महाकपिम्।
जम्बूमाली महातेजा विर्याध निशितैः शरैः ॥ 5.44.6 ॥

अर्धचन्द्रेण रदने शिरस्येकेन कर्णिना।
बाह्वोरारिर्व्याध नाराचैर्दशभिस्तु कपीश्वरम् ॥ 5.44.7 ॥

तस्य तच्छुशुभे ताम्रं शरेणाभिहतं मुखम्।
शरदीराम्बुजं फुल्लं विद्वं भास्कररश्मिना ॥ 5.44.8 ॥

তত্তস্য রক্তং রক্তেন রঞ্জিতং শুশুভে মুখম্।
যথাহকাশে মহাপদ্মং সিক্তং কাঞ্চনবিন্দুভিঃ ॥ 5.44.9 ॥

চুকোপ বাণাভিহতো রাক্ষসস্য মহাকপিঃ।
ততঃ পাশ্বেহতিরিপুলাং দদর্শ মহতীং শিলাম্ ॥ 5.44.10 ॥

তরসা তাং সমুৎপাট্য চিক্ষেপ জররদ্ বলী।
তাং শরৈর্দর্শভিঃ ক্রুদ্ধস্তাডযামাস রাক্ষসঃ ॥ 5.44.11 ॥

রিপন্নং কর্ম তদ্ দৃষ্টরা হনুমাংশ্চগুরিক্রমঃ।
সালং রিপুলমুৎপাট্য ভ্রামযামাস রীর্যরান্ ॥ 5.44.12 ॥

ভ্রামযন্তং কপিং দৃষ্টরা সালবৃক্ষং মহাবলম্।
চিক্ষেপ সুবহুন্ বাণান্ জম্বুমালী মহাবলঃ ॥ 5.44.13 ॥

সালং চতুর্ভিষ্চিচ্ছেদ রানরং পঞ্চভির্ভুজে।
উরস্যেকেন বাণেন দশভিস্তু স্তনান্তরে ॥ 5.44.14 ॥

স শরৈঃ পুরিততনুঃ ক্রোধেন মহতা বৃতঃ।
তমের পরিঘং গৃহ্য ভ্রামযামাস রেগিতঃ ॥ 5.44.15 ॥

অতিরোগোহতিরেনেন ভ্রামযিৎরা বলোৎকটঃ।
পরিঘং পাতযামাস জম্বুমালের্মহোরসি ॥ 5.44.16 ॥

তস্য চৈর শিরো নাস্তি ন বাহু জানুনী ন চ।
ন ধনুর্ন রথো নাশ্রাস্তত্রাদৃশ্যন্ত নেষরঃ ॥ 5.44.17 ॥

স হতস্তরসা তেন জম্বুমালী মহারথঃ।
পপাত নিহতো ভূমৌ চূর্ণিতাঙ্গ ইর দ্রুমঃ ॥ 5.44.18 ॥

জম্বুমালিং সুনিহতং কিঙ্করাংশ্চ মহাবলান্।
চুক্রোধ রারণঃ শ্রুৎরা ক্রোধসংরক্তলোচনঃ ॥ 5.44.19 ॥

स रोषसंरतिताम्रलोचनः
प्रहसुपुत्रे निहते महाबले।
अमात्यपुत्रानतिरीर्यक्रिमान्
समादिदेशाशु निशाचरेश्वरः ॥ 5.44.20 ॥

॥ इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे बाल्मीकीये आदिकार्ये सुन्दरकाण्डे चतुश्चरारिंशः सर्गः ॥